International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN:3049-2017
IJMH 2025; 2(2): 07-12
© 2025 IJMH
www.themultijournal.com
Received: 03-04-2025
Accepted: 08-04-2025
Publish : 12-04-2025

Ruchika Upadhyay
PhD.(Research Scholar),
Shri Lal Bahadur Shastri Rashtiya-Sanskrit University, New Delhi

Correspondence:
Ruchika Upadhyay
PhD.(Research Scholar),
Shri Lal Bahadur Shastri Rashtiya-Sanskrit University, New Delhi

वास्तुदोष निवारण के आधुनिक उपाय

Ruchika Upadhyay

आदियुग से वर्तमान समय तक इस धरती पर मनुष्य ने राष्ट्र, नगर, ग्राम, बस्तियां, महल, दुर्ग, प्रासाद एवं सामान्य प्रकार के गृह-निर्माण से लेकर बहुमंजिली इमारत का अपने रहन-सहन तथा उपयोग के लिए निर्माण किया है। वैदिक चिन्तनधारा में एक ही ऐसी विद्या है, जिसमें मनुष्यमात्र के लिए आवास एवं अन्य कार्यों के लिए निर्मित भवनों में पञ्चमहाभूतों के सन्तुलन का ध्यान रखकर भवन निर्माण के नियमों का वर्णन एवं विवेचन किया गया है, जिससे उसकी शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं को सक्रिय कर सही दिशा प्रदान करी जा सके। इस विद्या को स्थापत्य अथवा वास्तुशास्त्र के नाम से जाना जाता है। देवताओं के वास्तुकार भगवान विश्वकर्मा, जो कि ब्रह्माजी के ही मानस-पुत्र थे, वैदिक युग से ही भवन-निर्माण और वास्तुकला के सर्वोच्च विद्वान रहे हैं।

वास्तु पद अभिप्राय -

'वास्तु' शब्द 'वस्' निवासे धातु से 'अगारे णिच्च' इस उणादि सूत्र से तुण प्रत्यय के योग से निष्पन्न होता है। प्रत्यय णित् होने से 'वस्' में आदि वृद्धि होकर 'वास' हो गया है, जिसका अभिप्राय है, 'वसन्ति प्राणिनो यत्र' अर्थात् जहाँ प्राणी वास करते हैं, उस स्थान को 'वास्तु' कहते हैं।[1] इस दृष्टि से जलचर, वनचर, नभचर, इत्यादि प्राणी जहाँ-जहाँ वास करते हैं, उनके लिए वही स्थान 'वास्तु है। परन्तु अमरकोश में 'वास्तु' शब्द के पर्याय के रूप में 'वेश्मभू' शब्द का प्रयोग किया गया है।[2] इस शब्द की व्याख्या में स्पष्ट किया गया है कि 'वसन्त्यत्र गृहिणः' इति वास्तु। सीमित एवं साधारण अर्थ में 'वास्तु' शब्द का अर्थ 'निवास योग्य भूमि' अथवा भवन है, परन्तु वास्तुशास्त्रीय ग्रन्थों में वास्तु का अभिप्राय व्यापक है। विश्वकर्मवास्तुशास्त्र के अनुसार जहाँ पर देव, मनुष्य, गज, गो, अश्वादि पशु निवास करते हैं, उसे 'वास्तु' कहते हैं|[3] मानसार[4] और मयमत[5] में भी देव एवं मनुष्य निवासस्थल को 'वास्तु' कहा गया है।

मत्स्यपुराण में वास्तु का सम्बन्ध देवताओं से स्थापित किया गया है। ऐसा कथन है कि सभी देवताओं का निवास होने के कारण इसे 'वास्तु' कहते है।[6] 'वास्तु' शब्द की उत्पत्ति 'वस्तु' से भी मानी गयी है। इस प्रकार कोई भी निर्माण द्रव्य इष्टिका, काष्ठादि जब एक अभिनव निर्मिति में परिणत होते हैं तो वे ही 'वास्तु' संज्ञा से व्यवहृत होते हैं।[7] कौटिल्य ने भी वास्तु शब्द का अत्यन्त विस्तृत अर्थ करते हुए कहा है कि गृह के क्षेत्र, वाटिका, बन्ध, सेतु, प्रत्येक प्रकार का भवन, तडागादि सभी वास्तु कहलाते हैं|[8]

इस प्रकार से विस्तृत अर्थ में वास्तु से तात्पर्य केवल रहने योग्य भवन ही नहीं, अपितु राजभवन, प्रासाद, ग्राम, नगर, मार्ग अथवा देवालय, मण्डप, यज्ञवेदी, सभागृह, कूप, तालाब, वापी, स्तूपादि उन सभी निर्माणों से है, जो मानव के रहने, उपयोग करने एवं उसके अभीष्टजन तथा देवों के निवास स्थान आदि से है। अतः वास्तु का अर्थ केवल 'गृह' न होकर 'गृह आदि' हो गया है।

वास्तु का मूलप्रयोजन

वास्तु का मूलप्रयोजन है मनुष्य की आन्तरिक व शारीरिक प्रकृति एवं दृष्ट बाह्य प्रकृति में तालमेल किस प्रकार बैठे? किस प्रकार हमारा शरीर, मन और मस्तिष्क शान्तिपूर्ण जीवन यापन करे? सुख-समृद्धि एवं वृद्धि का मार्ग क्या हो? भारतीय ऋषियों एवं मुनियों ने इस सृष्टि को ईश्वरीय भक्ति से जोड़ चतुर्थपुरूषार्थ धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को सर्वोपरी मान कर विभिन्न सिद्धान्तों की रचना की।[9]

वस्तुतः मानव स्वयं तथा स्वजनों की रक्षा एवं सुख के भाव से निवासस्थान की कल्पना करता है। जिससे वह सभी प्रकार के सुखों को भोग जीवनयापन करे।[10] इसी विचार से आचार्यो ऋषियों मुनियों द्वारा कुछ विशिष्ट तत्व को ध्यान में रखते हुए कतिपय नियमों एवं सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया। ऋषियों द्वारा प्रतिपादित दिशा और उनके प्रतिनिधित्व करने वाले तत्व-

इन्हीं तत्वों एवं दिशाओं को ध्यान में रखकर जिस दिशा में जो तत्व है उसी अनुसार निर्माण कार्य हो तो वास्तुसम्मत और यदि नहीं हो पाता है तो वास्तुदोष उत्पन्न होते हैं।[11] वास्तुविदों द्वारा वास्तुदोष निवारण के लिए जो उपाय भारत में प्रचलित हैं वे मरम्मत, पुनर्निर्माण, अनुष्ठान, यन्त्र प्रयोग, मोती, धातु प्रयोग आदि का उपाय देते हैं। भारतीय वास्तु में ज्योतिषविज्ञान का भी समान ही महत्त्व है। यह कहना भी उचित ही होगा कि वास्तु, ज्योतिष, धर्म, कर्म आदि सभी मिलकर भारतीय संस्कृति, सभ्यता, इतिहास को पूर्ण बनाते है।

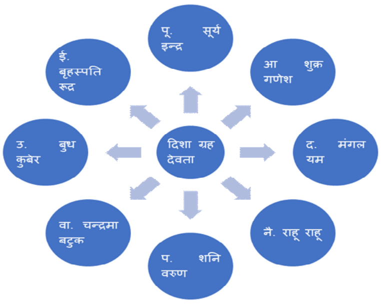

वास्तुमण्डल के अन्तर्गत जो देवता जिस दिशा में बैठे है उसी दिशा के प्रतिपालक है। अत: भारतीय विद्या यह कहती है कि उन दिशाओं के देवता संबंधित वर्ण (रंग), यन्त्र तथा मन्त्र तत् दिशा संबंधित दोषों का निवारण कर शान्ति प्रदान करते है। आधुनिक समय में पाश्चात्य परम्परा की वास्तुदोष निवारक दो प्रमुख विधाएँ पिरामिडविज्ञान और फेंगशुई विश्वभर में प्रचलित है। पिरामिडविज्ञान और फेंगशुई का मूलाधार भारतीयशास्त्र परम्परा के अनुरूप ही ब्रह्माण्डीय ऊर्जा-विज्ञान है। चुम्बकीय ध्रुवों के अनुसार जब पिरामिड और फेंग-शुई उपकरण को सही स्थिति में रखा जाता है तब अपनी तरंगों का प्रवाह फैलाकर ये उपकरण वास्तुदोष का निवारण करते हैं तथा एक शान्तिपूर्ण विशिष्ट सकारात्मक उर्जाक्षेत्र (ओरा) का निर्माण करते हैं।[1]

फेंगशुई परम्परा

चीनी सभ्यता की प्राचीन वास्तुकला के अनुसार बाह्य जगत को समझने तथा स्वयं के साथ सामंजस्य बैठाना ही फेंगशुई है।[12] ब्रह्माण्डीय सकारात्मक ऊर्जा का नाम ची तथा नकारात्मक ऊर्जा ड्रागन वेन्स के नाम से प्रख्यात है जो कि इस पृथ्वी के लिए लाभदायक और हानीकारक है। चीनी परम्परा में चीता तथा ड्रागन की ऊर्जा को यिन-याग के नाम से जाना जाता है। यह ऊर्जा विपरीत तत्त्वों का प्रदर्शन है- जल तथा अग्नि। फेंगशुई में खगोलीय, ज्योतिषीय, वास्तुशिल्प, ब्रह्माण्ड संबंधी, भौगोलिक और स्थलाकृतिक आयाम शामिल हैं।[13,14] 'सिमन ब्राउन' के अनुसार फेंगशुई प्राचीन नियमों की व्यवस्था है जिसके द्वारा मनुष्य सुख, शान्ति एवं समृद्धि हेतु अपने निवास स्थान एवं कार्यस्थल को व्यवस्थित करता है। पूर्व में यह विधि चीन, जापान तथा हाँग-काँग तक सीमित थी परन्तु आज विश्वभर में प्रचलित है।[15]

फेंग शुई की उत्पत्ति - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पौराणिक काल से लेकर हान राजवंश (206 -25 ई.) से पहले विभिन्न राजवंशों के समय तक फेंग शुई के विकास का अच्छी तरह से दस्तावेजीकरण नहीं किया गया था "लेकिन पूर्वजों की पूजा प्राचीन चीनी प्रथा की ओर मुड़ना होगा"।[16] हान राजवंश के बाद से इसकी लोकप्रियता में तेजी से वृद्धि हुई, जिसके कारण फेंग शुई के गुरुओं से हर चीज पर सलाह ली जाने लगी, शाही निवास या कब्र के लिए सबसे अच्छी जगह से लेकर व्यक्तियों के भाग्य और घर के अंदर फर्नीचर की उचित व्यवस्था तक। फेंग शुई की कला सुंग राजवंश के दौरान अपने चरम पर पहुंच गई, जो अंततः 1279 ई. में समाप्त हो गई। चिंग राजवंश (1644-1911 ई.) के दौरान इसने कुछ हद तक पुनरुत्थान का अनुभव किया, लेकिन राजवंशीय युग के अंत और कॉमनिज्म के उदय के साथ फेंग शुई को मुख्य भूमि चीन में काफी गिरावट का सामना करना पड़ा।[17]

चीनी परंपरा के अनुसार, यह चीन का अंतिम महान शासक "फू.शी" था, जिसने पृथ्वी पर ब्रह्मांडीय शक्तियों के प्रभावों का ज्ञान प्राप्त किया। किंवदंती है कि हो नदी से एक बड़ा ड्रैगन-घोड़ा निकला, जिसकी पीठ पर तीन-तीन रेखाओं से बने मूल आठ त्रिग्राम ज्यामितीय पैटर्न दिखाई दिए, जो स्वर्ग और पृथ्वी के रहस्यों को समझाते हैं, जिन्हें हो-सी एन के नाम से भी जाना जाता है। इन आरेखों का अध्ययन करने के बाद, जो पूर्व स्वर्ग अनुक्रम(पूर्वज) के रूप में जाने वाले अनुक्रम में दिखाई दिए। फू शी भविष्यवाणी की कला में अत्यधिक कुशल हो गए और ब्रह्मांड की मौलिक संरचना और कॉमिक यिन और यांग के बढ़ते और घटते के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त की।

यह ताइवान, हांगकांग और सिंगापुर देशों में रोजमर्रा की जिंदगी का एक बेहद महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो निजी और व्यावसायिक दोनों दुनिया में काफी हदतक अपनाया है। पिछले दस वर्षों में पश्चिम में फेंगशुई की लोकप्रियता में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और कई लोगों ने सद्भाव और सौभाग्य को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अपने कामकाजी माहौल और व्यक्तिगत जीवन में इसके दर्शन और तरीकों को शामिल किया है।[18]

फेंग-शुई विधिप्रयोग उपकरण

चीनी पद्धति में ची ऊर्जा को महत्त्व दिया गया है। ची ऊर्जा ब्रह्माण्ड में विचरण करती है। एसी मान्यता है कि ची ऊर्जा का सन्तुलन फेंगशुई द्वारा किया जाता है। यह ची दो भागों में यिन तथा यांग में

बटी हुई प्रतीत होती है। फेंग शुई में लोगों को जीवन में शांति, समृद्धि और खुशी जोड़ने के लिए नियमों की खोज की है। भवन के अंदर और बाहर में मौजूद वास्तु संबंधी दोषों को सुधारने के लिए कई उपचारात्मक वस्तुओं से जोडा जाता है। कुछ उपचारात्मक वस्तुएँ दर्पण उपचार, बगुआ दर्पण, क्रिस्टल, रोशनी, ध्वनि, रंग, भारी वस्तुएं, पौधे, बांस की बांसुरी, विद्युत उपकरण, पानी के फव्वारे, ऊर्जा प्रतीक आदि दुनिया में प्रचारित हैं।[19]. ची सामंजस्य हेतु "पाँच चीनी तत्त्व" (पानी, अग्नि, भूमि, मेटल, लकड़ी)[20] उपयोग, "अष्ट दिशा" तथा "नौ का ज्योतिष" विधि प्रयोग में लेकर वास्तुदोषों का आँकलन किया जाता है। चीनी सभ्यता द्वारा माने गए पाँच तत्व भारतीय वास्तुमण्डल के तत्त्वों से कुछ भिन्नता प्राप्त किए हुए है, वही चीनी यिन-यांग को प्रकृति-पुरुष ऊर्जा के रूप में माना जाता है। एक प्रकाश तो दूसरा अन्धकार का प्रदर्शक है। नौ का ज्योतिष एक यन्त्र रूप में कार्य करता है।[21] नौ के यन्त्र को मैजिक स्क्वेर के नाम से भी जाना जाता है यह दो प्रश्नों पर आधारित है पहला 'क्या करना है? दूसरा 'कब करना है?' भारतीय यन्त्रों के समान ही यन्त्रतन्त्र प्रयोग किया जाता है।[22] भारतीय यन्त्र विद्या में इसे 15 का यन्त्र कहा जाता है। एक दिशा पंक्ति में चलने पर अंकों का योग 15 ही होगा।

4	9	2
3	5	7
8	1	6

यथा - 4+5+6 =15.

6+7+2 = 15 आदि

चीनी शास्त्र में इसका प्रयोग वर्ष, मास, दिन तथा घण्टा निधारण के लिए किया जाता है। चीनी शास्त्र के अनुसार यह पद्धति फू हसी (fu-Hsi) द्वारा एक कछुए की पीठ पर देखी गई थी।[23] किन्तु इसका कोई शास्त्रीय प्रमाण प्राप्त नहीं होता है। केवल लोककथाओं का सहारा लेकर पथभ्रष्ट करने का माध्यम है।

फेंग-शुई उपकरण

फेंग शुई में बुरे प्रभावों का मुकाबला करने और सकारात्मक प्रभावों को प्रोत्साहित करने के लिए कई सरल उपकरणों का उपयोग किया जाता है। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण और उनका महत्व इस प्रकार है[24]

पौधा :- एक जीवित पौधा शेंग ची(सकारात्मक) के प्रवाह को उत्तेजित करेगा और बड़े पौधों का उपयोग क्लू(बुरे प्रभावों) के प्रवाह को नियंत्रित करने के लिए किया जा सकता है जहां यह बहुत तेजी से यात्रा कर रहा है।

ध्वनि :- पवन झंकार और घंटियाँ आमतौर पर सौभाग्य को आकर्षित करने के लिए फेंग शुई व्यवस्था में उपयोग की जाती हैं। मधुर शोर को स्थिर ची के प्रवाह के लिए माना जाता है। उपयुक्त ध्वनि स्तर पर रेडियो, टेलीविजन या स्टीरियो जैसे ऑडियो उपकरण भी प्रवाह को नवीनीकृत करेंगे।

ईविल आई :- ईविल आई क्रिस्टल/चार्म विभिन्न आकारों में उपलब्ध है, जो सिरेमिक, मिट्टी, कांच, लकड़ी, एक्रिलिक, धातु आदि से बना है। सबसे लोकप्रिय हैं ईविल आई बीड्स गोल, नीले और सफेद संकेंद्रित हलकों के साथ कांच से बना है। एक खुली आँख जैसा दिखता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार, घर में स्थापित ऊर्जा का वहाँ के गृहवासियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। चीनी वास्तु के अनुसार घर पर ईविल आई ताबीज सौभाग्य लाता है और गृहवासियों को बीमारियों से बचाता है जो नुकसान पहुंचा सकती हैं, इससे नकारात्मक ऊर्जा को निष्क्रिय किया जाता है और घर में सकारात्मक ऊर्जा को स्थापित किया जाता है। इसका उपयोग नकारात्मक ऊर्जा से बचाने और घर के बाहर मौजूद किसी भी 'शा क्यूई' अर्थात् नकारात्मक ऊर्जा को रोकने के लिए किया जाता है।

इनडोर फाउंटेन :- वास्तु के अनुसार पानी के फव्वारे की आदर्श दिशा उत्तर दिशा है। वास्तु के अनुसार, उत्तर के अलावा, उत्तर-पूर्व और पूर्व भी पानी के लिए उचित हैं।[25] यह स्थान सफेद रंग से सम्बन्धित है। अत: संगमरमर के पानी के फव्वारे या सफेद रंग के फव्वारे आदर्श हैं। झरने या इनडोर फाउंटेन को इस प्रकार से रखा जाना चाहिए कि पानी आपके घर की दिशा में बहे न कि घर के बाहर की दिशा में। चीनी वास्तु के अनुसार, बहता पानी धन, संपत्ति और आसपास के वातावरण में सकारात्मकता के प्रवाह का प्रतीक है। घर के लिए पानी के फव्वारे स्थान की सुंदरता और लालित्य को जोड़ते हैं। पानी के बहने की आवाज घर के वातावरण को शांति प्रदान करते हुए एक सुखदायक माहौल बनाती है।[26]

दर्पण :-

शयन कक्ष में दर्पण दिशा उत्तरी या पूर्वी दीवार में होना चाहिए। वास्तु के अनुसार आदर्श दर्पण दिशा ड्रेसिंग टेबल को बिस्तर के किनारे रखना है। बेडरूम में ड्रेसिंग टेबल से जुड़ा दर्पण रखना है, तो सुनिश्चित करें कि यह बिस्तर के सामने न हो या बिस्तर पर व्यक्ति को प्रतिबिंबित न करे। घर में दर्पण महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें ऊर्जा प्रवाह को आकर्षित करने की जबरदस्त शक्ति होती है। दर्पण एक आवश्यक सजावट तत्व है, क्योंकि यह आपके घर में सकारात्मक ऊर्जा लाता है। दर्पण घर में वृद्धि और समृद्धि का स्वागत करते हैं। नकारात्मक ऊर्जा को अवशोषित करते हुए, यह निवासियों के अच्छे स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में भी मदद करता है। दर्पण एक इमारत से शार ची को प्रतिबिंबित कर सकते हैं और अच्छी रोशनी या सकारात्मक दृश्य या छवि को कैप्चर करके शेंग ची को खुद को स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। कोई भी चमकदार परावर्तक वस्तु, जैसे रोशनी या रॉक क्रिस्टल, उसी तरह काम करेंगे।[27]

गति :- ऐसी वस्तुएँ जो गोलाकार गति करती हैं ऊपरी पंखे, पवनचक्की, वेदरवेन ऐसी वस्तुएँ हैं जो प्राकृतिक पवन ऊर्जा का उपयोग करती हैं, जिसका उपयोग फेंग शुई सलाहकार के निर्देशन में ची को उत्तेजित करने या विक्षेपित करने के लिए किया जाता है।[28]

कला एवं रंग :- गर्म रंगों वाली पेंटिंग ठंडी उत्तर दिशा वाली दीवार में जान डाल देंगी। झील या नदी को दर्शाने वाला कैनवास पश्चिम की दीवार पर अच्छी तरह से रखा जा सकता है, जो सफेद बाघ का घर है। रंग कम्पास दिशाओं और पाँच तत्वों से निकटता से संबंधित हैं। जब सामंजस्य में उपयोग किया जाता है तो वे यिन और यांग की शक्तियों को आदेश देते हैं।[29]

जेड :- प्राचीन चीनी लोग जेड को एक बहुत ही पवित्र पत्थर मानते थे, जो देवताओं की ओर से नीचे की मानव जाति के लिए एक उपहार है।[30] इस कारण से, जेड के छोटे टुकड़े या छोटी नक्काशीदार मूर्तियों का उपयोग अक्सर प्रतिकूल शक्तियों का मुकाबला करने के लिए किया जाता है।

ड्रैगन :- ज़ूर ड्रैगन नर (यांग) है, इसका तत्व लकड़ी है और इसे हमेशा पूर्वदिशा में होना चाहिए। बाहरी फेंगशुई में इसे ऊंचे स्थान पर पाया जाता है, जैसे कि पर्वत श्रृंखला या पहाड़ी। घर के अंदर, इसे एक ठोस दीवार द्वारा दर्शाया जा सकता है जो दुश्मनों से आश्रय प्रदान करती है। ड्रैगन सुरक्षात्मक है और यह हमेशा पूरक सफेद बाघ के साथ दिखाई देना चाहिए।[31]

बाघ :- सफेद बाघ मादा (यिन) है और हमेशा दाईं ओर (पश्चिम) होती है। कहा जाता है कि वह धरति का प्रतिनिधित्व करती है और निचले इलाकों, घाटियों और नदी के किनारों में पाई जाती है। ड्रैगन को हमेशा सफेद बाघ से ऊंचे स्थान पर होना चाहिए, जिसे कभी हावी नहीं होना चाहिए। यदि किसी साइट के पश्चिम में एक पहाड़ है और पूर्व में समतल भूमि है, उदाहरण के लिए, यह एक अनुकूल स्थान प्रस्तुत नहीं करता है, क्योंकि सफेद बाघ नीला ड्रैगन के लिए बहुत मजबूत साबित होगा। सफेद बाघ भी पानी से जुड़ा हुआ है और इस क्षेत्र में झील, तालाब, धारा या यहां तक कि एक मछलीघर होना अच्छा है।[32]

लाल पक्षी :- दक्षिण दिशा में लाल फीनिक्स का क्षेत्र है जो यांग बल, गर्मी, प्रकाश, समृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है और इस तरह, यह सबसे शुभ दिशा है। प्राचीन चीन में सभी मंदिर और अन्य महत्वपूर्ण संरचनाएं दक्षिण की ओर मुख किए हुए थीं।

काला कछुआ :- किसी भी साइट के पीछे, जो उत्तर की ओर होनी चाहिए, काले कछुए की यम शक्ति हावी होती है।[33]उसे पहाड़ियों की एक श्रृंखला द्वारा दर्शाया जाता है जो साइट को ठंडी उत्तरी हवाओं से बचाती है। घर का मुख्य प्रवेश द्वार कभी भी उत्तर की ओर नहीं होना चाहिए और खिड़कियों या दरवाजों के स्थान पर एक ठोस, भारी दीवार होना बेहतर है।

पिरामिड विज्ञान

मिस्र में सदियों पहले निर्मित, पिरामिडों का रहस्य लंबे समय तक मानव मन को चकित करता रहा। 'पिरामिड' शब्द एक ग्रीक शब्द है जो दो शब्दों पाइरा और मिड से बना है। 'पाइरा' का अर्थ है अग्नि, सार्वभौमिक जीवन ऊर्जा या ब्रह्मांडीय बल, 'मिड' शब्द का अर्थ है मध्य या केंद्र कोर।[34] प्राचीन मिस्र के शासक फिरौन ने महान संरचनाओं का निर्माण करके अपनी सफलता और शक्ति का प्रदर्शन किया। पिरामिडों का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य धर्म तथा अपनी पैतृक स्मृतियों को जीवित रखना था। प्राचीन मिस्रवासियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा "फिरौन" को आंशिक रूप से भगवान और आंशिक रूप से मानव के रूप में देखा जाता था, और पिरामिड उनकी शक्ति को प्रदर्शित करने का एक और तरीका था।

प्राचीन मिस्रवासियों का मानना था कि फिरौन दिव्य था और मृत्यु के बाद भी जीवित रहेगा इसलिए आवश्यक था कि फिरौन के शरीर को सावधानीपूर्वक संरक्षित किया जाए। यह ममीकरण के माध्यम से किया गया था। ममीकरण में पहला कदम आंतरिक अंगों को निकालना था। किन्तु हृदय को नहीं निकाला जाता था क्योंकि इसे विचारों और भावनाओं जैसे महत्वपूर्ण कार्यों का केंद्र माना जाता था। इसके बाद, शरीर से नमी को हटाने के लिए नमक जैसे पदार्थ नैट्रॉन का उपयोग किया गया। अंत में, शव को लिनन में लपेटा गया।[35]

अन्य स्रोत के अनुसार मिस्र में पिरामिड निर्माण का महान काल पुराने साम्राज्य के तीसरे और चौथे राजवंश के दौरान था, जो लगभग 2613-2181 ईसा पूर्व तक चला। प्रारंभिक मिस्रवासियों के दफ़न मिट्टी की ईंटों से बने ढांचे से बने होते थे जिन्हें मस्तबा या पत्थर की बेंच कहा जाता था। एक शाही मकबरा आधारशिला में उकेरा जाता था और फिर मस्तबा से ढक दिया जाता था । मस्तबा एक सपाट शीर्ष वाली आयताकार संरचना थी जिसके किनारे अंदर की ओर झुके होते थे। मस्तबा में आमतौर पर एक दफ़न कक्ष और मृत्यु के बाद के जीवन के लिए आवश्यक सामान रखने के लिए एक कक्ष होता था। शिलालेख और उत्कीर्णन शामिल थे। सबसे ऊंचा ज्ञात मस्तबा लगभग 20 फीट ऊंचा था।[36]

'पिरामिड पॉवर' के आधुनिक खोजकर्ता स्वयं बोबिस ने पिरामिड के आकार की टोपी बनाई और उसे पहनकर आजमाया। बोबिस का कहना है कि इसको पहनने से सिर दर्द तो दूर हो ही जाता है, साथ ही कई प्रकार के मानसिक विकार भी दूर हो जाते हैं। बोविस से बहुत लोग प्रभावित हुए जिन्होनें पिरामिड शक्ति का अनुभव किया। पैरानॉर्मल के लेखक शीला ऑस्ट्रैंडर और लिन श्रोएडर ने 1970 की अपनी लोकप्रिय पुस्तक को पिरामिड शक्ति के लिए समर्पित किया। इस पुस्तक ने दुनिया के लिए पिरामिड शक्ति की अवधारणा और एंटोनी बोविस के बारे में कहानी दोनों को पेश किया।[37] पं. गोपाल शर्मा द्वारा विभिन्न पिरामिडों का विवेचन किया गया है।[38] उनके मतानुसार जीवन की अलग-अलग परिस्थितियों के अनुसार अलग-अलग पिरामिड प्रयोग में लाए जाते हैं। यथा – इच्छापूर्तिपिराम, शन्कुपिरामिड, डोरसेटपिरामिड, अध्ययनपिरामिड, सकारात्मक-शक्तिपिरामिड, वाटरबीमरपिरामिड, मणिपत्थरपिरामिड आदि।

रंग चिकित्सा – (fa-maa color therapy)

रंग चिकित्सा, जिसे क्रोमोथेरेपी के रूप में भी जाना जाता है, चिकित्सा का एक रूप है जो कुछ मानसिक और शारीरिक अस्वस्थ स्थितियों के इलाज के लिए रंग और प्रकाश का उपयोग करता है। इस पर सर्वप्रथम चर्चा ऐविसेना के द्वारा The Canon of Medicine[39].

पुस्तक में की गई थी। रॉबर्ट हंट की पुस्तक Research on Light (1844)[40] में कलर थैरेपी पर पौधों से संबंधित प्रयोग के विषय में प्राप्त होता है। The influence of the blue cray of the sunlight and of the blue colour of the sky (1876)[41] में नीले रंग की महत्ता को बताते हुए मददगार साबित करने का प्रयास किया गया है। यही से आधुनिक रंग चिकित्सा का आरम्भ माना जाता है। एडिटर-इन-चीफ और थेरेपिस्ट एमी मोरिन (LCSW-Licensed clinical social worker) द्वारा होस्ट किया गया, "The verywell mind" पोडकास्ट का एपिसोड बताता है कि रंग मन और शरीर को कैसे प्रभावित करते हैं।

भारतीय प्राचीन शास्त्रों में प्रारम्भ से ही गृह आदि में तोरण, चित्र, श्रीकलश, प्रतिमादि का विशेष महत्व रहा है।[42] निश्चित ही उस काल में भी प्रकृति के साथ विशिष्ट प्रकार के सौन्दर्य का समावेश रहा है। वास्तु की दृष्टि से तो इनका सम्बन्ध मनुष्य से है ही किन्तु सौन्दर्य, मानसिक एवं दैहिक शान्ति के लिए इनको विशिष्ट माना जाता है। ऋषियों द्वारा प्रदत्त ग्राह्य एवं त्याज्य चित्रों का विशेष व्याख्यान प्राप्त है।[43] ऐसा कहा जाता है जिस प्रकार सौभाग्यवती नारियों में श्रृंगारिणी अर्थात् श्रृंगार युक्ता को श्रेष्ठ माना जाता है ठीक उसी प्रकार भवन होना शुभ है वहा भी वास्तु सम्मत एवं सजावट युक्त भवन श्रेष्ठ है।[44]

भारतीय ग्रन्थों में बताया गया है कि मनुष्य का शरीर विभिन्न प्रकार के रंगों से संबंधित है यथा रक्त का वर्ण लाल, नेत्र में सफेद और काला, बाल अवस्था एवं जलवायु आधारित काले, सफेद, भूरे आदि । ठीक इसी प्रकार असंतुलन में नाखून पीला पड़ना, शरीर की कोशिकाओं का खत्म होने पर त्वचा का काला पड़ना, मोतियाबिंद होने पर आँख की पुतलियों का सफेद पड़नादि। आयुर्वेद शास्त्र मनुष्य के शरीर की रीढ़ की हडडी में सात चक्रों की उपस्थिति मानता है जो मनुष्य को आध्यात्मिक जागृति की ओर ले जाते है।[45] सात चक्र इस प्रकार → मूलाधार चक्र, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत विशुद्ध अजन (आज्ञा), सहस्रार यह क्रम में नीचे से ऊपर की ओर जाते है जो शरीर में आध्यात्मिक उर्जा के प्रवाह को दर्शाते है। चक्र वर्ण नीचे से ऊपर की ओर इस प्रकार है[46] -

चक्र	मूलाधार चक्र	स्वाधिष्ठान	मणिपुर	अनाहत	विशुद्ध	अजन (आज्ञा)	सहस्रार
वर्ण	रक्त	महरून	नीला	अरुण (उगता सूर्य)	धूम्र	स्वानुभूति विषय	स्वानुभूति विषय

कुण्डलिनी योगतत्व तथा गोरक्षपद्धति के अनुसार तालिका[47,48]-

चक्र	मूलाधार चक्र	स्वाधिष्ठान	मणिपुर	अनाहत	विशुद्ध	अजन (आज्ञा)	सहस्रार
वर्ण	पीला	रक्त	नीला	धूम्र	रक्त	श्वेत	श्वेत

जिस प्रकार ज्योतिषशास्त्र में ग्रह सम्बन्धित रत्नों का विधान है उसी प्रकार स्थापत्य विद्या में भी वर्णों का प्रभाव दिखाई देता है।[49]
रंग चिकित्सा में यह माना जाता है कि अलग-अलग रंग शरीर पर अलग-अलग प्रभाव डालने में सक्षम होते हैं।[50]

- **लाल** : लाल रंग का उपयोग किसी ऐसे व्यक्ति को ऊर्जावान या स्फूर्ति देने के लिए किया जाता है जो थका हुआ या उदास महसूस कर रहा हो। हालाँकि, लाल उन लोगों को भी ट्रिगर कर सकता है जो पहले से ही तनावग्रस्त हो सकते हैं।
- **नीला** : क्रोमैरेपिस्ट नीले रंग का उपयोग अवसाद और दर्द को प्रभावित करने के लिए करते हैं। माना जाता है कि नीले रंग के गहरे रंगों में शामक गुण होते हैं और उन लोगों के लिए कोशिश की जा सकती है जो अनिद्रा या अन्य नींद संबंधी विकारों का अनुभव करते हैं।
- **हरा** : हरा रंग प्रकृति का रंग है और क्रोमोथेरेपिस्ट के अनुसार, यह तनाव को दूर करने और व्यक्ति को आराम देने में मदद कर सकता है।
- **पीला** : पीले रंग का उपयोग आपके मूड को बेहतर बनाने और आपको अधिक खुश और आशावादी बनाने के लिए किया जा सकता है।
- **नारंगी** : नारंगी, पीले रंग की तरह ही, लोगों से खुश भावनाओं को जगाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। चमकीले गर्म रंग को भी भूख और मानसिक गतिविधि को उत्तेजित करने में सक्षम माना जाता है।

निष्कर्ष :-

वास्तुशास्त्र को मानव जाति की भलाई के लिए बनाया गया था, फेंगशुई विज्ञान में तत्वों का स्थान भारतीय पद्धति से कुछ भिन्नता प्राप्त किए हुए है अत: फेंगशुई नियम भारत में समान रूप से फलप्रदायक नहीं हो सकते, वहीं पिरामिड अनिवार्य रूप से फिरौन और उनकी आत्माओं के लाभ के लिए बनाए गए थे। । फेंगशुई आकार, रंग, पानी, पहाड़ी, फोटो, प्रकाश व्यवस्था, दर्पण आदि पर आधारित है तथा पिरामिड एक मकबरा है जो अचेतन देह को स्थान देता है तभी प्रायश: उसे पूर्व में ही घरों से बाहर बनाया गया।

फेंगशुई आज के चकाचौन्ध वाले आधुनिक समाज में आंतरिक सजावट/फर्नीचर की व्यवस्था के लिए अधिक लागू होती है जो फ्लैटों और अपार्टमेंट के लिए अद्भुत काम करती है, पिरामिड मूल रूप से ब्रह्मांडीय ऊर्जा का दोहन करने के लिए बनाए गए थे। मिस्र प्रदेशीय अवधारणा है कि ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं ने पिरामिड के अंदरूनी हिस्सों को ताज़ा और ऊर्जावान बनाए रखा। यह मानव आभा के विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र को संतुलित करता है, जिससे मन, शरीर, आत्मा और पर्यावरण में सामंजस्य होता है। पिरामिड किसी भी घर, कार्यालय, दुकान, कारखाने, बीमार इकाई या कॉर्पोरेट घर को शारीरिक रूप से बदलने, स्थानांतरित करने या तोड़ने के बिना दोषों को ठीक करता है। भारतीय वास्तुशास्त्र विभिन्न बलों, ब्रह्मांडीय किरणों, प्राकृतिक नियमों, पांच मूल तत्वों, विभिन्न ऊर्जा स्रोतों आदि पर आधारित है।

चीनी विज्ञान फेंगशुई ने दिशाओं को अधिक महत्व नहीं दिया है, यह विचारधारा केवल "दिशाहीन फेंगशुई" की वकालत करती है। वहीं मिस्र प्रदेशीय पिरामिड विज्ञान पूर्वजों की आत्माओं की अत्यधिक और अंधविश्वासी पूजा तथा उन्हें स्थान मात्र देकर जीवित रखना है।

कोई ठोस शास्त्रीय आधार न होते हुए एक अनूठा क्रांतिकारी समाधान के रूप में पिरामिड वास्तु प्राचीन ज्ञान की समय-परीक्षणित अवधारणाओं को नए युग के दृष्टिकोण के साथ जोड़ने, और फेंग्शुई केवल तत्वों को आधार मानकर उनसे निर्मित वस्तुओं से उपाय प्रदान कर व्यक्तियों को पथभ्रमित करने का प्रयासमात्र है।

संदर्भ ग्रंथ

1 हि.वि.को.,खं. २१, पृ.२३६

2 "वेश्मभूर्वास्तुस्त्रियाम्" - अ.को., काण्ड २, पुरवर्ग १९

3 देवतानां नराणाञ्च गजगोवाजिनामपि निवासभूमिरशल्पज्ञैर्वास्तु-संज्ञमुदीरितम्।' वि.वा. ७।१

4 मानसार ३।१

5 अमर्त्याश्चैव मर्त्याश्च यत्र यत्र वसन्ति हि। तद्वस्त्विति मतं तज्ज्ञैः॥ मय. २।१

6 निवासत्सर्वदेवानां वास्तुरित्याभिधीयते॥ म.पु. २५२।१४

7 स.भ.नि. पृ.८-९

8 गृहं क्षेत्रमारामः सेतुबन्धस्तटाकमाधारो वा वास्तुः। अ.श. अधि.३ अ.८

9 चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सलोकश्च भवेत् ध्रुवम्। शिल्पशास्वपरिज्ञानान्मत्र्येऽपि सुरतां व्रजेत् ।। विश्वकर्मा.वा.प्र. २।३०

10 स्त्रीपुत्रादिकभोगसौख्यजननं धर्मार्थकामप्रदम्। जन्तूनामयनं सुखास्पदमिदं शीताम्बुधर्मापहम् ॥
वापी-देवगृहादिपुण्यमखिलं गेहात्समुत्पद्यते। गेहं पूर्वमुशन्ति तेन विबुधाः श्रीविश्वकर्मादयः ॥

11 पूर्वस्यां श्रीगृहं प्रोक्तमामेध्यां स्यान्महानसम्।शयनं दक्षिणायान्तु नैर्ऋत्यां शस्त्रमन्दिरम् ।।भोजनं पश्चिमायान्तु वायव्यां धनसञ्चयम्।उत्तरे द्रव्यसंस्थानमैशान्यां देवमन्दिरम् ।।वास्तुसौख्यं सप्तमभाग श.२७४-२७५

12 “Fengshui is a system of laws considered to govern spatial(celestial) arrangement and orientation in relation to the flow of energy (chi), and whose favourable or unfavourable effects are taken into account when siting(fix) and designing buildings” Acc.to oxford dictionary

13 The Practice of fengshui is founded on the belief that the arrangement of our exterior world exerts a powerful influence on our interior equilibrium and personal happiness. The Origins of wisdom fengshui. p.no.14

14 Feng shui is an ancient Chinese art of arranging buildings, objects, and space in an environment to achieve harmony and balance. Feng shui means “the way of wind and water.” Acc.to education.nationalgeographic.org

15 The term *feng shui* means, literally, "wind-water" (i.e. fluid). From ancient times, landscapes and bodies of water were thought to direct the flow of the universal Qi – "cosmic current" or energy– through places and structures. Recovering the sense and essence of place: the eastern practice of fengshui and its role in western architecture - kelly wai ying lam

16 fengshui – Simon brown

17 The origins of wisdom fengshui, O.B. DUANE

18 Essential fengshui, Cassell & Co.

19 Practical Fengshui, Simon Brown

20 Advance vastu and remedies, p. no. 246-247

21 Feng Shui: The Art of Improving Your Home to enhance your life, p.no.10

22 Practical fengshui. P.no.11

23 मन्त्र तन्त्र साधना. अ.१०. पृ.सं. १३७

24 fengshui: the art of improving your home to enhance your life p.no.16

25 The origin of wisdom fengshui p.no. 82

26 "The flowing water of the fountain is believed to reactivate stagnant chi, restore balance to the area, and produce beneficial yang energy.”

27 Vastu for home and office p.no.44

28 Fengshui for Architecture p.no. 20

29 Taoist Fengshui – the ancient roots of the Chinese art of placement

30 The origin of wisdom fengshui p.no. 50

31 The principles of feng shui

32 Basic science of feng shui

33 High vibe feng shui

34 Basic principles of Vastu p.no.51

35 The Pyramid p.no.42

36 The pyramid: The mystery, culture, and science of Egypt’s great monument p. no. 28

37 Psychic discoveries behind the iron curtain, chapter 27

38 Comprehensive Vastu.

39 The Canon of Medicine.

40 Research on Light.

41 The influence of the blue cray of the sunlight and of the blue colour of the sky.

42 तत्र द्रव्यैरन्यैरुत्कृष्टैर्वा नवैस्तु घटैः । आयाद्यथोचितं तद्विस्तारोच्चादिभि-स्त्वलङ्कार्यैः ॥ वास्तु उद्धारधोरणी अ.2 श.14

43 मूलद्वारं नान्यैर्द्वारैर्भिसन्दधीत रूपद्धर्या । घटफलपत्र प्रमथादिभिष्च तन्मङ्गलैश्चिनुयात् ।। बृहत्संहिता वास्तुविद्या अ. श.82

44 नारीसु सधवा श्रेष्ठा, सधवासु श्रृंगारिणी। श्रृंगारिणीसु भामा हि भामिनीसु पतिव्रता ॥ भवन तथैव राजते सद्म, सद्मषु च श्रृंगारकम्। श्रृंगारकेषु विज्ञेय, वास्तुमण्डनमण्डितम ॥ वास्तुश्रृंगार दर्पणम्. 14-15

45 हठयोग

46 कुण्डलिनी साधना पृ. स. 24

47 कुण्डलिनी योगतत्व

48 गोरक्षपद्धति षट्चक्रनिरूपणम् श.15-16

49 प्रतिमा विज्ञान पृ. स. 288

50 तरुचिन्तन 2015